JOHN Dewey (विद्यालय विषय से संबंधित शासनकेन्द्रित विज्ञान की संपूर्ण विचार धारा की भूमिका - जॉन डेवी
जॉन डीवी

* 1. जीवन परिचय * 2. दर्शन * 3. दर्शन की विशेषताएं * 4. शिक्षा व उद्देश्य * विद्यालय
* 5. पाठ्यक्रम * अनुशासन * 6. शिक्षक का स्थान * 7. प्रयोजनवादी शिक्षा व अस्त्र
- भारतीय शिक्षा पर प्रभाव

1.* Life history of John Dewey :- (जीवन परिचय) महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक जॉनडीवी महोदय का जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका के बर्लिंगटन नगर में सन 1859 को हुआ। उनकी अभिरूचि दर्शनशास्त्र में थी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात डीवी ने अध्यापनकार्य मिनेसोटा विश्वविद्यालय में 1888-89 तक, मीशीगन विश्ववि० में 1889 से 1904 तक किया। शिकागो विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का अध्यापन करतेहुए डीवी ने शिक्षाशास्त्र के अध्यापन में भी रुचि ली।

डीवी के पुस्तक का नाम - The School & Society (1899) है, जो बहुत लोकप्रिय हुए, शिक्षा दर्शन ग्रंथ Democracy & Education (1916) में प्रकाशित हुई Reconstruction in ~~Phijh~~ Philosophy (1920), आदि प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं।

डीवीके प्रयोगशाला School का खोला इस स्कुल के खोलने में उनका प्रयोजन यह था कि वह दर्शन, मनोविज्ञान तथा शिक्षा के विषयों की प्रयोगशाला से ऐसा संबंध स्थापित कर के जैसा विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का प्रयोगशाला से होता है।

2. Dewey's Philosophy → (डीवी का दर्शन) जॉन डीवी भी मूल्यों को शाश्वत नहीं मानते। यथार्थ भी इनके लिए परिवर्तनशील है। सत्य वही है जो कसौटीपर खरा उतरे। डीवी विकासवाद (Evalution) में विश्वास करते हैं, तथा प्रकृतिवादी है। John Dewey प्रयोजनवाद के भी समर्थक थे। उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ किसी अध्यात्म की खोज करना नहीं बल्कि शाश्वत मुल्यों की पहचान करना है। उनका कहना था कि जो शिक्षा प्रयोग के द्वारा प्राप्त की जाती है वह अधिक लाभदायक होती है।

3. Salient features of John Dewey's Philosophy :- (डीवी के दर्शन की विशेषताएं)

1. वही ज्ञान देना उचित है, जो उपयोगी हो तथा साधन रूप हो।
2. परिवर्तन ही मूल सत्य है।
3. प्रयोग द्वारा सत्य की उत्पत्ति होती है। प्रयोगों पर समाज की ~~प्रगति~~ निर्भर है।
4. औद्योगिक विकास का कारण ही प्रयोग है।
5. विचार कर्म से उत्पन्न होता है, कर्म द्वारा ही हम 'प्रयोग' को मूल पद्धति के अनुसार सत्य प्राप्त करते हैं, उसी के कारण एक विचार उत्पन्न होता है।
6. कर्म द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है।
7. हम कैसे सोचते हैं? इस विषय में डीवी के देन महत्वपूर्ण है, वह कहते है की हम पहले

P.T.O

Scanned with CamScanner

समस्या निर्धारित करते है और इस समस्या को सुलझाने के लिए कल्पना बनाते हैं, उस कल्पना को जाँच कर सिद्धांत का निर्माण करते है।

8. प्रजातंत्र डीवी के लिए एक आवश्यकता है। वह एकतंत्र से सदैव ही श्रेष्ठ है।

9. साध्य में विश्वास न करके साधन मे विश्वास करने के कारण उसके दर्शन को नैमित्तिकवाद की संज्ञा मिली है। नैमित्त वस्तु वह है जो कि किसी दूसरे के लिए साधन-रूप में प्रयुक्त हो तथा उसे सफल बनाने मे सहायता करे। 'कला कला के लिए' तथा ज्ञान, ज्ञान के लिए' विश्वास है कि प्रजातंत्र ही स्थायी शासन है। यह परिवर्तन पर आधारित है।

10. आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए योजना-पद्धति का निर्माण हुआ है। बालक की आवश्यकता को सामने रखकर, उसी के द्वारा योजना पद्धति कार्य करती है।

4. Education:- (शिक्षा) John Dewey ने शिक्षा के अर्थ को साफ करते हुए लिखा है कि "शिक्षा अनुभव के लगातार निर्माण, जीवन की प्राप्ति व प्रक्रिया है वह व्यक्तियों की समस्त क्षमताओं का विकास है, जो मनुष्य को अपने वातावरण को नियंत्रित करने एवं अपनी समस्याओं को समाधान करने योग्य बनाती है।

Jlick के अनुसार - Dewey की शिक्षा अब्राहम लिंकन के उस कथन के अनुरूप है- कि **शिक्षा व्यक्तियों की व्यक्तियों के लिए और व्यक्तियों द्वारा संपादित की जाने वाली प्रक्रिया है।**

दुसरी ओर स्वयं John Dewey लिखते हैं कि जो संबंध शिक्षा का शारीरिक जीवन से है वही संबंध शिक्षा का सामाजिक जीवन से है।

अर्थात Dewey शिक्षा के मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दोनों पक्षों को महत्वों पर प्रकाश डालते है।

*** Aims of Education :-** (शिक्षा का उद्देश्य) प्रयोजनवाद में विश्वास रखने वाले डीवी पूर्व निश्चित उद्देश्यों में विश्वास नहीं रखते, उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य — तात्कालीन होता है। डीवी ने लिखा है -

"शिक्षा का उद्देश्य नहीं होता है केवल व्यक्ति अभिभावक एवं शिक्षक के उद्देश्य होते हैं, यह उद्देश्य विभिन्न कालों के लिए भिन्न होते है। उनका मानना था की:-

A. शिक्षा का उद्देश्य बालक की आंतरिक क्रियाओं एवं आवश्यकताओं पर आधारित होनी चाहिए।

B. शिक्षा के उद्देश्य सामान्य एवं अंतिम न होकर विशिष्ट एव तातकालीन होना चाहिए।:-

5.

5. Curriculum (पाठ्यक्रम) :- John Dewey पाठ्यक्रम के विषयों एवं क्रियाओं को बालक के अनुभवों समस्याओं आदि से घनिष्ट संबंध रखना चाहते थे, अर्थात वह Child Centerd पाठ्यक्रम के पक्षधर थे, उनके अनुसार पाठ्यक्रम के निर्माण में निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए।

(i) पाठ्यक्रम छात्रों की योग्यताओं अनुभवों एवं आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए।

(ii) पाठ्यक्रम कठोर न होकर मुलायम/लचीला होना चाहिए।

(iii) पाठ्यक्रम के विकास के लिए विषयों के चयन में बालकों को स्वतंत्रता होनी चाहिए, एवं उनकी रुचि का ध्यान रखना चाहिए।

(iv) पाठ्यक्रम प्रयोगिक होना चाहिए।

(v) पाठ्यक्रम में वह सब क्रियाएँ होनी चाहिए जो बालक को अपने मूल्यों के निर्माण में सहायता करे।

(vi) पाठ्यक्रम में जो विषय दिये जाए उनका सीधा संबंध वर्तमान जीवन आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक राजनैतिक आदि क्षेत्रों से होना चाहिए।

* Methods of Teaching (शिक्षण विधियाँ) :- Dewey की शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित है।

1. John Dewey ने परंपरागत शिक्षण विधि का सख्त विरोध किया।
2. ऐसी विधियों पर बल दिया जिससे बालक आसानी से ज्ञान प्राप्त करले।

Dewey के अनुसार शिक्षण के निम्न सिद्धांत है।

(i) करके सीखना/क्रिया द्वारा सीखना।
(ii) अनुभव द्वारा सीखना।
(iii) प्रयोग द्वारा सीखना।
(iv) खोज द्वारा सीखना।
(v) अवलोकन द्वारा सीखना।

* अनुशासन/Discipline :- Dewey का विश्वास मुक्त अनुशासन व आत्म अनुशासन के सिद्धांत में था। विशेषतः ऐसा अनुशासन जो उद्देश्यपूर्ण और रचनात्म गतिविधि पर निर्भर हो, तथा सामाजिकता पर आधारित हो, ऐसा ही अनुशासन उद्देश्यपूर्ण होता है जो बालक एवं विद्यालय के लिए उपयोगी हो। Dewey परम्परागत अनुशासन के विरोधी हैं। Dewey मानते हैं की कड़े अनुशासन से बालक को किसी काम को करने से थोड़ी देर रोका जा सकता है, उसे अनुशासित नहीं किया जा सकता। अतः बालकों में सामाजिक अनुशासन उत्पन्न किया जाना चाहिए।

Dewey ने लिखा है:-
कार्य को करने से कुछ परिणाम निकलते हैं, यदि इन कार्यों को सामाजिक-सहयोगी ढंग से किया जाए तो इससे अपने प्रकार का अनुशासन उत्पन्न होता है।

P.T.O

6. Place of Teacher / शिक्षक का स्थान :- जैसा की हम अच्छी तरह जानते है की प्रत्येक बालक / छात्र की प्रवृति प्रकृतिक रूप से क्रियात्मक और रचनात्मक होती है। इसलिए बालक को मुख्य धुरी की संज्ञा दी एवं इसे ही ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम निर्धारण एवं बालक की योग्यताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का निर्माण करने पर बल दिया। Dewey ने बालकों की स्वतंत्रता का पूर्ण समर्थन किया - वे कहते है की बालकों को पूरी तरह से स्वतंत्र छोड़ दो उसे घूमने-फिरने का पूरा अवसर दिया जाए जिससे वह नये-नये प्रयोग स्वंय कर ज्ञान प्राप्त कर सके।

7. प्रयोजनवादी शिक्षा :- प्रयोजनवाद को अंग्रेजी में Pragmatism कहते है। युगों से संसार इस तथ्य को आश्चर्य से देखता आ रहा है कि दार्शनिक जीवन, मरण-जीवन, आत्मा परमात्मा, सृष्टि आदि के विषय में विचार करते हुए शिक्षा पर कुछ कहने लगता है। सुकरात, महात्मा गाँधी, रुसो, डीवी, अरस्तु आदि के सिद्धांत इसके प्रमाण हैं।

डीवी ने प्रयोजनवाद को क्रमबद्ध दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। आज प्रयोजनवाद का जो स्वरूप है प्रचलित है उसमें अधिकतर डीवी का ही सिद्धांत है।

प्रयोजनवादी दार्शनिक शिक्षा को मानव की जन्मजात आवश्यकता मानता है। शिक्षा एक विकासात्मक प्रक्रिया है। प्रयोजनवादी शिक्षा में विभिन्न प्रयोजनों पर बल देते है। प्रयोजवाद कहता है की शिक्षा के उद्देश्यों का रूप में सामाजिक दक्षता का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। शिक्षा समाज की वस्तु है। समाज के अस्तित्व के लिए भी शिक्षा की आवश्यकता है। समाज शिक्षा के द्वारा ही अपनी परम्पराओं, आवश्यकताओं एवं मान्यताओं आदि को सुरक्षित रखता है। इस लिए शिक्षा का उत्तरदायित्व समाज के ऊपर है। समाज शिक्षा का संगठन करता है।

प्रयोजनवादी शिक्षण विधि के कुछ सिद्धांत है, जो निम्न है।

(i) बालक अधिकतम स्वतंत्रता दी जाए।
(ii) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखा जाए।
(iii) बालक में सामाजिकता की भावना को विकसित किया जाए।
(iv) बालक की रुचि का ध्यान रखा जाए।
(v) विद्यालय में कार्यों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
(vi) बालक को कक्षा-कार्य में सक्रिय बनाया जाए।
(vii) करके सीखने पर बल दिया जाए।

इसके अतिरिक्त प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम की रचना के चार सिद्धांत का प्रतिपादन करता है। जो निम्नलिखित है।

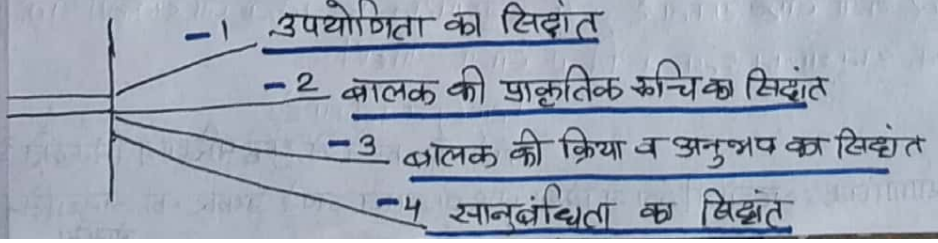

Scanned with CamScanner